International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 831-835

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 831-835
www.allresearchjournal.com
Received: 05-04-2017
Accepted: 11-05-2017

अरूण कुमार दीप
शोधच्छात्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, दिल्ली, भारत

Correspondence
अरूण कुमार दीप
शोधच्छात्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, दिल्ली, भारत

उत्तरभारतीय भाषा पंजाबी एवं संस्कृत का सम्बन्ध

अरूण कुमार दीप

प्रस्तावना

वर्तमान समय का 'पंजाब' परन्तु किसी समय का सप्त सिन्धु अनादि काल से इस पृथ्वी पर विद्यमान है तथा इसके निवासी किसी भाषा के माध्यम से परस्पर विचार-विनिमय करते आये हैं। वह भाषा कौन-सी थी, उसका क्या नाम था, इस बारे में कुछ पता नहीं। संसार में सबसे प्राचीनतम जो पंजाब का साहित्य आजकल लिखित रूप में प्राप्त होता है। उसका सर्वप्रथम दर्शन वेद में दृष्टिगोचर होता है। इस बारे में सब इतिहासकारों का एक ही मत है। इस वेद की भाषा का नाम विद्वानों ने वैदिक भाषा रखा। तथा कुछ समय पश्चात उसी भाषा में परिवर्तित अथवा शोधित माने जाने वाले स्वरूप को 'संस्कृत भाषा' या 'लौकिक भाषा' कहा जाने लगा। समय के परिवर्तन के साथ उसी संस्कृत भाषा का नाम 'पाली भाषा' रख लिया गया। शताब्दियों बीत जाने के बाद यह पाली 'प्राकृत' फिर 'अपभ्रंश' नाम से पुकारी जाने लगी। तत्पश्चात् वर्तमान समय आ पहुँचा इसमें विद्वानों द्वारा आजकल जन-साधारण द्वारा बोली जाने वाली पंजाब की भाषा का नाम पंजाबी भाषा रख लिया गया है।

संस्कृत और पंजाबी का सम्बन्ध

पंजाबी तथा संस्कृत में बहुत ही पुरातन सम्बन्ध है तथा पंजाबी पर संस्कृत का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा। पंजाबी उसी भू प्रदेश की भाषा है जहाँ ऋषियों द्वारा उच्चारण किए गये पवित्र वेदमन्त्र आकाश में गूँजते है।, यहीं पाणिनि मुनि जैसे यहाँ वैयाकरण तथा अन्य विषयों के प्रकाण्ड विद्वान् हुए, जिनकी बुद्धि की प्रखरता की थाह आज तक संसार के विद्वान नहीं पा सके। पूर्वजों के ज्ञान का प्रवाह आज तक उसी तरह अविच्छिन्न परम्परा से चला आ रहा है। इसमें वातावरण बदलने के कारण समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं। इसी भाषा का नाम हमारे पूर्वजों ने कुछ नहीं रखा था बाद में कुछ लोगों ने अपना पाण्डित्य-प्रदर्शन करने के लिए इस भाषा के वैदिक पाली संस्कृत, अपभ्रंश आदि नाम रख लिए हैं। उस प्राचीन समय में वही भाषा जिसे आज हम वैदिक या संस्कृत कहते हैं। पंजाब की भाषा उस समय की पंजाबी थी और आधुनिक पंजाबी उसी का विकसित रूप है।

कालान्तर में इसी पंजाबी भाषा में अरबी, फारसी आदि अन्य भाषाओं के शब्द आ मिले। यदि हम पंजाबी भाषा में बाहर से मिले हुए तत्त्वों (अरबी, फारसी आदि शब्दों) को अलग कर देवें तो हमें संस्कृत श्रोत वाले तत्सम तथा तद्भव शब्द मिलेंगे। तथा पंजाबी में संस्कृत के अनुसार ही विभक्ति, प्रत्यय, धाताऐं, समास, मुहावरे आदि का प्रयोग परिलक्षित होता है।

जिस प्रकार नदी का प्रवाह किसी पर्वत अथवा झील में से एक छोटी सी धारा के रूप में निकलता है। तथा उसमें अनेक अन्य झरनों तथा नालों का पानी आ मिलता है। लाखों घास-फूस, फूल-पत्ते आदि उसमें गिर जाते हैं। तथा बाहर भी निकल जाते हैं और आगे चलकर उसमें से अनेक नहरें नालें निकल जाते हैं। उसी तरह किसी भाषा के प्रवाह में भी। स्थितियों में बदल जाने के कारण अनेक शब्द तथा मुहावरे आदि आ मिलते हैं।

इसी नियम के अनुसार संस्कृत भाषा में भी अनेक शब्द दूसरी भाषाओं से आकर मिले तथा निकल गये। उसी संस्कृत भाषा का वर्तमान स्वरूप 'पंजाबी भाषा' है। पीछे जाकर जिसका सीधा रिश्ता वैदिक भाषा के साथ आ जुड़ता है। भाव यह है कि जैसे एक बच्चा पैदा होने के पश्चात् क्रमशः अंकुरित-प्रफुल्लित निखरते शरीर वाला यौवन के पड़ाव को लांघकर धीरे-धीरे बुढ़ापे की कगार पर पहुँच जाता है। उसी तरह भाषा का स्वरूप भी समय के साथ-साथ बदलता चला जाता है।

इसी तरह हजारों वर्ष पूर्व पंजाब के जन साधारण द्वारा बोली जाने वाली भाषा संस्कृत थी। उसका ही परिवर्तित या घिसा हुआ स्वरूप वर्तमान में पंजाबी है।

पंजाबी में आगत्, वैदिक तथा संस्कृत के शब्द, धातुऐं, विभिक्तियाँ, उपसर्ग, प्रत्यय आदि निम्न हैं-

पंजाबी में वैदिक शब्द

वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त हुए कुछ ऐसे शब्द हैं जो वेदों की भाँति लौकिक संस्कृत साहित्य में भी आम उपलब्ध होते हैं तथा वे ही शब्द पंजाबी भाषा में भी उसी रूप में या कुछ विकृत रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे ऋग्वेद के पहले मन्त्र *''अग्निमीळेपुरोहितम्। यज्ञस्य देवमृत्विजम। होताररंत्नधातमम्।''* में आने वाले अग्नि, पुरोहित, यज्ञ देव तथा रत्न आदि लौकिक संस्कृत की भाँति पंजाबी में भी थोड़े बहुत विकृत या उसी रूप में आम मिलते हैं।

पंजाबी में मिलने वाले कुछ वैदिक संस्कृत के शब्द इस प्रकार है-

पंजाबी = अणजाण, अणजाणू = अज्ञानी = वैदिक = (अनाजानत) (अथर्ववेद)।

पं. = आण्डा वै. = आण्ड (ऋग्वेद / अथर्ववेद) (9, 7, 13)।

पं. = इन्नूं = सिर पर घड़ा आदि उठाने के लिए रखा जाने वाला गोल मूँज, कपड़े आदि का चक्र - वै. (ईण्डव) (शत पथ ब्राह्मण)।

पं. = उद्दां = उस तरह (वै.) अमुथा (निरुक्त)

पं. = चप्पण, चप्पणी = मिट्टी के बर्तन का ढक्कन = वै. (चप्य) माध्यन्दिनी (19.88) वै. चप्प (काण्व) यज्ञ में प्रयुक्त होने वाला एक छोटा सा पात्र।

पं. = चरना (छोटा पायजामा) = वै. = चलनक (शत्पथ ब्राह्मण 5. 2.1.8 सायण) = नाचने वालियों का एक अधोवस्त्र।

पं. = चिलकणा = चमकना वै. = (चिकि तु चिकिति ऋग्वेद शतपथ ब्राह्मण) चमकदार।

पं. = पोल्ला, पोला = बीच में से खाली खोखला थोका (वै.) पूल्यः (अर्थवेद) थोथा दाना।

पं. = मूरा = मूर्ख, वै. = मूरः (ऋग्वेद)

पं. = विच्च = अन्दर = वै. व्यचरण् (ऋग्वेद अथर्ववेद) विच् (जुदा करना) विचाल (मध्यान्तर)

पं. = साता = सात वस्तुओं का समूह (साप्त = ऋग्वेद तैत्तिरीय संहिता)

पं. = सुहान (सुन्दर) सुन्दरता = वै. (शुभान) (ऋग्वेद)

पंजाबी में वेद वाला लेट लकार

केवल वेद सम्बन्धी लेट लकार जो इच्छा तथा कभी-कभी भविष्यत् अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता था और संस्कृत में उपलब्ध नहीं होता। पश्चिमी पंजाबी में यह आज भी पाया जाता है। यथा- गच्छसी, जासी, करसी, होसी इत्यादि पंजाबी रूपों के मूलभूत वैदिक लेट लकार के रूप क्रमशः गच्छसि, (यासि) करासि, भवासि इत्यादि है।

एक और बात स्मरणीय है जिस प्रकार वेद में 'करन् (वे करें)' गच्छान् वे जाऐं आदि लेट लकार प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप आम मिलते हैं। पंजाबी भाषा में ''ओहकरण'' (वे करें) ओह जाण (वे जाऐं) इत्यादि वाक्यों में उन रूपों का प्रयोग दिखाई देता है।

पंजाबी में वैदिक तद्धित प्रत्यय 'त्वन्'

यह सर्व विदित है कि वेदों में 'भाव' अर्थों को व्यक्त करने के लिए संज्ञाओं तथा विशेषणों के अन्त में 'त्वन्' तद्धित प्रत्यय प्रयोग में लाया जाता है- यथा- कवित्वन् कवपन। पतित्वन = पतिपन। महित्वन् = बड़प्पन।

ठीक इसी प्रकार यह वेद सम्बन्धी 'त्वन्' प्रत्यय थोड़ा सा विकृत होकर पंजाबी भाषा का चौड़त्तण = चौड़ापन, बालतण = बालपन, नीलत्तण = नीलापन आदि शब्दों में 'त्तण' आदि रूपों में प्राप्त होता है। जो पंजाबी भाषा के वैदिक भाषा के साथ सीधे सम्बन्ध में स्पष्ट प्रतीत है। यही आगे विस्तृत होकर बालपण = बालपणा, बड़पन = बड़पना आदि शब्दों में अनेक रूप धारण कर उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि करते हुए अपनी लोकोत्तर गरिमा को अभिव्यक्त कर रहा है।

पंजाबी 'ल़' 'ड़' 'ढ़' वेदमूलक

पंजाबी भाषा के 'गल़', गला़, गाल़ गाला़ गूला़, बोला़ भोला़ आदि शब्दों में प्रयुक्त होने वाले 'ल' की ध्वनि जो 'गुल्ह' = गूढ़ आदि शब्दों में मिलती है। सीधी वेद से पंजाबी में आई है। यह संस्कृत में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। यही बात् = ऐड़ा, जोड़ा, कूड़ा, चूड़ा, जुड़ा, काढ़ा, साढ़ा, गाढ़ा आदि शब्दों में प्रयुक्त होने वाले 'ड़' 'ढ़' की ध्वनि के बारे में जान लेनी चाहिए।

पंजाबी में संस्कृत से आई धातुएँ

धातुएँ किसी भी भाषा की आत्मा होता है। यदि धातुऐं निकाल दी जाऐं तो भाषा मृत की भक्ति चेतना शून्य तथा गतिहीन होकर अधूरी रह जाती है। पंजाबी भाषा की धातुऐं जो इसकी प्राण रूप हैं प्रायः सभी संस्कृत वाली हैं। जिनमें से संकलित की गई कुछ धातुऐं निम्न हैं-

'उकसण = √कुंस, √कुंश = (बोलना) कुंसन कुशन। उसारना = उत्त् √सृ उत्सारण। उक्करन-ना उत् = √कृ, उत्कीर्ण। उच्चारण = उच् - = √चर = उच्चारण।

अस्तणा = (√अस्) अस्त, अटकरण-णा = आ = √टङ्क, आटङ्कन। आरम्भणा = आ - = √रभ, आरम्भण। आखणा = आ √ख्या, (आख्यान)।

इच्चणा – निश् = √चि, निश्चयन, संस्कारना – सम – = √कृ, संस्करण, संङ्कोचणा = सम = √कुच् सङ्कोचन। स्थापना = √स्था, स्थापन।

हसणा = √हस् (हसन्)। हढ़ना = √ह, हरण, हुलारना = उद् = √लल्, उल्लालन।

कहिणा = √कथ – कथन। कट्टणा = √कृत कर्तन, कतः, कत्त।

खगालना = स. = √क्षल = सक्षालन, खरणाव–ना = क्षर क्षरण।

गुहणा, √गुम्फ गुम्फन। छलकणा = उत् √शत, उच्छलनं जगणा = √जागृ जागरण। जमना = √यम, यमन। जरना = √ज्वल, ज्वलन। जींदण = √जृ, जरण, जीर्ण।

झरना = √क्षर क्षरण झट (झरना)। टंगणा = √टङ्कक, टङ्कन। टुरन्–ना = √तुर, √त्वर, तुरण त्वरण। ठहिरणा = √स्थिर, स्थिरण, स्थिरति, (निरुक्त 9.11) तरणा √तृ तरण, तुणकणा = √तुण, तुणनन (झुकाना) तौंसणा = √तृष्ण, तर्षण, तृष्णा। दगदगाउणा = (√दह, दहन) दग्ध।

संस्कृत धातुओं का पंजाबी पर प्रभाव

संस्कृत के शब्दों की भाँति उसके धातुओं का भी पंजाबी पर अमिट प्रभाव है। विशेष रूप से संस्कृत के लट् लकार यानि वर्तमान काल, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृट्, लकारों का प्रभाव, पंजाबी के इन लकारों के अर्थों के वाचक के रूपों में देखा जा सकता है। ये लकार पंजाबी के मूल स्तम्भ है।

संस्कृत के वर्तमान काल का पंजाबी पर प्रभाव

संस्कृत धातुओं के वर्तमान–काल के (लट्) के रूपों का पंजाबी पर थोड़ा ही प्रभाव है। पंजाबी के वर्तमान काल की केवल सहायक क्रियाऐं संस्कृत मूलक हैं यथा–

एकवचन	बहुवचन
हैं (ऐ)	हन (अन)
हैं (ऐं)	हो (ओ)
हाँ (आँ)	हाँ (आ)

क्रमशः इसके मूलभूत √अस् = होना, धातु से बने संस्कृत रूप ये हैं–

एकवचन	बहुवचन
अस्ति	सन्ति
असि	स्थ
अस्मि	स्मः

संस्कृत के भूतकाल का पंजाबी पर प्रभाव

संस्कृत धातुओं के भूतकाल का प्रभाव भी पंजाबी पर लक्षित होता है। यथा– सं. आस् (ऋरग्वेद) आस = प. सा।

संस्कृत की √अस् = होना, धातु का वेद में भूतकाल, लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में आस् रूप होता है तथा लिट् लकार भूतकाल रूप 'आस्' है। यह रूप ध्वनि परिवर्तन के कारण परिवर्तित होकर पंजाबी में 'सा' = था (थि) बन गया है।

सं. = आसीत् आसीः = पं.सी.।

सं. = आसन् = पं. = सन्।

सं. = आस्थात् = प. 'था' या 'ता'।

यथा– प. ओह था = सं. असौ आस्थात्।

प. तू था = सं. त्वं अस्थाः।

प. में था = सं. अहं आस्थाम्।

संस्कृत भविष्य काल का पंजाबी पर प्रभाव

पंजाबी भाषा में दो तरह के भविष्यत् प्रयोग में आते हैं इनमें पहला जिसके वाचक रूपों के अन्त में ये चिह्न लगाते हैं।

एकवचन	बहुवचन
सी	सन्
से	सो
सां	सूँ

संस्कृत भविष्यत् काल

एकवचन	बहुवचन
स्यति	स्यन्ति
सयसि	स्यथ
स्यामि	स्यामः

इस प्रकार क्रमशः सं = स्यति (पं.) सी, स्यन्ति = प. सन्, स्यसि = प. से आदि चिन्ह स्पष्ट रूप से पंजाबी पर संस्कृत का प्रभाव प्रकट करते हैं। जैसे–

सं. – चलिष्यति = पं. = चलसी। सं. चलिष्यन्ति = प. चलसन।

स. चलिष्यसि = प. चलसें। सं. चलिष्यथ = प. चलसो।

सं. चलिष्यामि = पं. चलसां। सं. चलिष्यामः = प. चल सूं।

लोट् लकार का प्रभाव

संस्कृत लोट् पंजाबी में अधिक संख्या में समान एवं कई कुछ विकृत आकृति वाले मिलते हैं। उन रूपों का प्रयोग भी संस्कृत वाले ही अर्थ में होता है।

पंजाबी संस्कृत समान रूप लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन–

पं तूं कर	सं त्वं कर (वेद) कुरु
तूं किर	त्वं किर
तूं कील	त्वं कील
तूं धर	त्वं धर
तू निन्द	त्वं निन्द

कुछ विकृत रूप

पं.	सं.
तूं उठ्ठ	त्वं उत्तिष्ठ
तूं कट्	त्वं कर्त
तू खुरच	त्वं क्षुर

संस्कृत लोट् तथा विधिलिङ्ग का प्रभाव

संस्कृत के लोट् लकार तथा विधिलिङ्ग के बहुत से रूप कुछ विकृत रूप में पंजाबी वाक्यों में प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कुछ शब्द निम्न निर्दिष्ट हैं।

लोट		विधिलिङ्ग	
पं	सं	पं	सं
अटकू	आटङ्कयतु	अटके	टङ्गअङ्कयेत
उक्खणू	उत्खनतु	आक्खे	आख्यायात्
उट्ठू	उत्तिष्ठतु	उठ्ठे	उत्तिष्ठेत्

पंजाबी में संस्कृत से आये उपसर्ग

संस्कृत के प्रायः सभी उपसर्ग में भी उसी रूप में या कुछ विकृत रूप में प्रयुक्त होते हैं।

प.		सं. प.		सं. (उदाहरण)
अ	=	आ आकड़ाणा	=	आकङ्डन्
अध	=	अभिअधमान	=	अभिमान
अत्	=	अति अत् (कथनी)	=	अतिकथन
अन्	=	अनु अनवाद्	=	अनुवाद
अध	=	अधिअधकारी	=	अधिकारी
अप	=	अप् अपकार	=	अपमान, आदि
उत	=	उत् उतसाह	=	उत्साह
अभ	=	अभिअभमान	=	अभिमान
उप	=	उप् उपकार	=	उपदेश आदि
दुश्	=	दुस् दुशकरम्	=	दुष्कर्म
नि	=	निर् निआद्दरी	=	निरादर

इसी प्रकार निस् =नेह्, परि = पड़, प्रति = परत्, प्रति = परति, परा = परा, परि = भर आदि रूप में पंजाबी में उपसर्गों का प्रयोग होता है।

पंजाबी में संस्कृत के कृदन्त प्रत्ययों का प्रभाव

पंजाबी में संस्कृत के इन प्रत्ययों का प्रभाव भी विशेष रूप से पड़ा है। संस्कृत प्रत्ययों के इस प्रभाव को व्यक्त करने के लिए शब्द मालाऐं नीचे दी जा रही है–

पं.	सं.	पं.	स.
उच्चारिया	उच्चरित	जड़िया	जटितः
कहिया	कथितः	जद्धा	यब्धः
चलिया	चलितः	ठप्पिया	स्थापितः
फलिया	फलितः	पढ़िया	पठितः

'शतृ' प्रत्यय वाले रूप

पं.	सं.
उस्सरदा	उत्सरत्
उप्पड़दा	उत्पतत्
किरदा	किरत

संस्कृत 'ल्युट' अन प्रत्यय वाले शब्द

पं.	सं.
कराउणा	कारणम्
चलाउणा	चालनम्
हसाउणा	हासनम्

'णमुल' प्रत्यय वाले शब्द

पं.	सं.
इक्कर	एवङ्कार
इऊंकर	इत्थङ्कार
किक्कर	कथङ्कार

पंजाबी में संस्कृत के विभिक्तियों का प्रभाव

संस्कृत में वर्णित विभक्तियों का भी पंजाबी पर प्रभाव अवश्य पड़ा है सोदाहरण स्पष्ट करते हैं।

संस्कृत के सम्बोधन का प्रभाव

पंजाब के पुल्लिंग तथा स्त्रीलिङ्ग के सम्बोधन प्रायः संस्कृत के समान ही हैं यथा–

सं	प.
राम!	राम!
पुत्र!	पुत्तर! पुत्त!
महाराज!	महाराज!
सखि!	सखी!

प्रथमा विभक्ति का प्रभाव

संस्कृत की प्रथमा विभक्ति का पंजाबी पर पूरा प्रभाव है जैसे हम देखते हैं– पं. के सो = स. (सो) (सः), प. औह = सं. = असौ, प. जो = सं = यो (यः), पं. तू, तुम = सं. त्वम्, आदि प्रथमा विभक्ति एकवचन के ही निदर्शन है।

द्वितीया विभक्ति

पंजाबी में दूसरी विभक्ति का चिह्न 'नूँ' है इसका प्रयोग मुण्डेनू मारदा है। कुड़ी नु चुक्कदा है। मुण्डे ते कुड़ीयां नूं उढ़ाऊँदा है। संस्कृत में पुल्लिङ्ग नपुंसक लिङ्ग की दूसरी विभक्ति बहुवचन क चिह्न उन्, आन्, इन्, आनि, आणि आदि है। यथा = साधुन, अमून, हरीन् तानि सर्वाणि आदि, पंजाबी में नूँ चिह्न का विकास 'उन' आदि चिह्नों से हुआ है।

तृतीया विभक्ति का प्रभाव

संस्कृत का तृतीया विभक्ति का भी पंजाबी पर बहुत प्रभाव है। पंजाबी में तृतीया विभक्ति एकवचन के लिए प्रायः नें (नें) न्हें (न्हें) मैं, न, एन, एं, सोहैं। जैसे = पं. में 'उसने अखिया', उन्हें कीत्ता, रामनें सुणिआ, किन देखिआ, तथा संस्कृत में तृतीया विभक्ति एकवचन का चिह्न प्रायः 'एन' या 'एण' या 'ना' है। जैसे- देवेन = देव ने रामेण = रामने, अमुना = आदि।

चतुर्थी विभक्ति

चतुर्थी विभक्ति का कोई विशेष चिह्न नहीं मिलता। केवल पं. तिज्जुण तिज्जो, तुझ, तुध, युद्ध (तेरे लिए) संस्कृत - तुभ्यं (तेरे लिए) प. = मिझु. मुंझ (मेरे लिए) संस्कृतः = माध्यम आदि पद प्राप्त होते हैं।

पञ्चमी विभक्ति

पञ्चमी विभक्ति का भी पंजाबी में विशेष प्रभाव देखा जाता है।

सं.	प.
गृहतः (घर से)	घरतो (घर से)
ग्रामतः (गाँव से)	ग्रांतो (गाँव से)
कुतः (कहाँ से)	कित्थो (कहाँ से)

षष्ठी विभक्ति

पंजाबी की छठी विभक्ति पर भी संस्कृत का विशेष प्रभाव पड़ा है। पंजाबी में षष्ठी विभक्ति का चिह्न दा, दी, दे तथा का, की, के हैं। संस्कृत में इसे तद्धित प्रत्यय 'इय' लगाकर प्रयोग किया जाता है। यथा- त्वदीयः = पं. तुझदा, स. = यदीयः = पं. = जिहदा (जिसका) सं. = मदीयः = पं. मुझदा (मेरा) आदि रूप सिद्ध होता है।

पंजाबी में कुछ पर दा, दी के स्थान पर डा, डी, डे आदि बन जाते हैं।

यथा-

मिहडा (मुझका), मामक (मुझका), थुआडा (आपका), धुआडा - डा (आपका) धुआडी, (आपकी) संस्कृत में इसका प्रयोग - मामकः, त्वत्क, स्वकीयः, परकीयः, तावकीनः आदि रूप बनते हैं।

सप्तमी विभक्ति

सप्तमी विभक्ति का पंजाबी में सर्वाधिक प्रभाव है। पंजाबी में सातवीं विभक्ति के चिह्न ए, ऐं, में, इ, इं, ईं, ईं, च आदि हैं। जैसे-

संस्कृत	पंजाबी
गृहे (घर में)	घर विच
विषये	विखे, अग्गे, पीच्छे, थल्ले
भ्रमे	भलामे
विरहे	वराहे

उपसंहार

वैदिक अथवा संस्कृत नाम से स्मरण की जाने वाली 'पंजाब' अथवा 'सप्तसिन्धु' की पवित्र-भूमि की प्राचीन मातृभाषा ने प्रत्येक पहलू से वर्तमान पञ्जाबी भाषा को प्रभावित किया है। यह बात केवल साधारण तथा अल्पज्ञता के कारण अदूरदर्शी लोगों को समझाने के लिए कही गयी है। वस्तुतः इस पावन वसुन्धरा की वही प्राचीन भाषा को अनेक विदेशी आक्रमणों के सम्पर्क के कारण तथा कालचक्र के संघर्ष के कारण कुछ टेढ़ी-मेढ़ी अथवा विकृत हो गई है। किसी समय वैदिक भाषा तथा संस्कृत कही जाकर, ऋग्, यजुः, साम्, अथर्व एवं रामायण, महाभारत आदि पर छुप बैठी तदनन्तर कुछ घिस-पिट कर कालान्तर में 'पाली' नाम रखवाकर महाराज अशोक आदि के शिलालेखों का माध्यम बनी, फिर पश्चात् कालीन बौद्धों तथा जैनों के साहित्य में प्राकृत का रूप धारण कर दिक्-दिगन्त में व्याप्त रही, तथा कुछ समय के लिए अपभ्रंश कह कर, विकास के विविध पड़ाव लाँघती हुई वर्तमान समय में पंजाबी कही जा रही है। ऐसी स्थिति में यह कहना कि वैदिक अथवा संस्कृत भाषा ने इस पंजाबी को प्रभावित किया हो, कितना उपर्युक्त है। इस बात का निर्णय तत्त्वदर्शी विद्वदजन स्वयं करें। भला अपने आप को भी कोई प्रभावित करता है? वैदिक या संस्कृत भाषा इस पंजाबी भाषा से कोई भिन्न भाषा नहीं। अथवा यूं कहिये कि वैदिक या संस्कृत भाषा 'पञ्जाबी' का पूर्ववर्ती स्वरूप है।